॥ श्रीहरिः ॥

शुद्धिविवेचन ।

अल्मोड़ा (रानी खेत) निवासी पं० शिव-
दत्त सत्ती शर्म्मा विरचित

जिसको
सनातन धर्म के महोपदेशक—
पंडित रामदत्त ज्योतिर्विद्की सम्मत्यानुसार

पंडित कालूराम शास्त्री अपरौधाने
छपवाकर प्रकाशित किया

Printed by Pt. Sukhcharanlall at the Sharda
Press Cawnpore 16th March 1914.

प्रथम वार २००० } सं० १९७० सन् १९१४ { मूल्य -)

धर्मोजयतुनः सदा ।

* हमारावक्तव्य *

कतिपय नवशिक्षित विशेषकर आर्यसमाजी महाशय, अस्पृश्य जातियोंको यज्ञोपवीत पहिनाकर शर्म्मा वर्म्मा बना लेनेसे, एवं यवन ईसाई आदि अभक्ष्य भक्षण करनेवाली जातियों की १५ । २० मिनटके हवन से मनमानी शुद्धि करा द्विजातियोंसे इन पुश्तैनी गैर आर्यजातियों का गठ-जोड़ करके रोटी बेटी का सम्बन्ध करलेनेमात्रहीसे देशोद्धारका स्वप्न देखरहेहैं गांव २ घर २ भाई भाइयों में इसी कारण फूट और कलह की वृद्धि प्रत्यक्ष देखतेहुएभी इन सज्जनोंको इस उद्योगके द्वारा एकता शांति और देशोन्नति सूझरही है ।

वर्णाश्रमी लोगोंको दबाकर वर्णव्यवस्थाका मटियामेट करके जातिबन्धनको तोड़देनेसेही धर्म प्राण हिंदूजाति एवं पुण्यभूमि भारतवर्ष की उन्नति करना चाहते हैं । वर्ण धर्मके मिटजानेसे वर्णसङ्कर जाति उत्पन्न होगी इस

नहीं कहसकते उससमय इस देशकी क्या उन्नति होगी! आज इसी विषयपर एक विचारपूर्ण लेख आपके सन्मुख उपस्थित करते हैं। जिसके लेखक एक आर्यसमाजी सज्जन हैं जिनका नामहै पं० शिवदत्त सत्ती आप पुराने आर्य हैं अनेक अंशोंमें सत्तीजीसे हमारा मत भेद होनेपरभी आपके विचारोंकी हम अवश्य तारीफ करेंगे सत्यका ग्रहण और असत्यका त्याग समाजका चौथा नियमहै वास्तव में आप इस नियमके पूरे अनुयायीहैं शुद्धि विषयपर यह आपकी निष्पक्ष सम्मति है सनातनधर्मी तथा आर्यसमाजी दोनों विचारके लोगोंसे हमारी प्रार्थना है कि पक्षपात छोड़कर विचार पूर्वक आद्योपांत इस लेखको पढ़लें शम्॥

विनीत—

रामदत्त ज्योतिर्विद

भीमताल

विनय।

यद्यपि मैं स्वामी दयानन्दजीके उपदेशानुसार आर्य धर्मको तन मन धनसे ग्रहण करताहूँ तथापि मैं सामाजिक आर्य नहींहूं किन्तु उपासना विषय में आर्यधर्मको अवश्यही मानताहूं वादानुवादसे मेरा कोई प्रयोजन नहीं है।

हमारे पर्वती भाई लोग मुझसे खेद न मानें मैंने जितनी पुस्तकें बनाईहैं सर्व सामान्यके उद्देश्यके लिए रची हैं अवश्य मैं शास्त्रसे अनभिज्ञहूँ। इस लिए भाषाहीमें समस्त पुस्तक बनीहै। यह शुद्धिका पचड़ा मुझेभी अनुचित ज्ञात होताहै।

निवेदक—

पं० शिवदत्त सत्ती शर्मा वाजपेयी

रानीखेत

सं० १९७०

शुद्धिविवेचन

प्रार्थना ।

हे न्याययुक्त नियत कर्मके पालन करनेहारे सत्य स्वरूप दयानिधे परमेश्वर ! आपने जो कृपाकरके हमारेलिए सत्य लक्षणसे प्रसिद्ध नियमों से युक्त सत्याचरण व्रतको अच्छे प्रकार सिद्ध कियाहै उस अपने आचरण करने योग्य सत्य नियम को किसप्रकार हमलोग करनेको समर्थ होवें उसका आचरण अच्छेप्रकार करसकें जो हम उत्तम वा मध्यम कर्म करें हे ईश्वर हमको वैसाही फल प्राप्तहो ।

शुद्धि विषयमें हमारी सम्मति ।

हमारे स्वदेशी वर्णाश्रमीय द्विजातीय ? मित्रो आज दिन भारतमें शुद्धि विषय में अंधाधुन्धका नक्कारा चहुँओर बज रहा है । शुद्धि शुद्धि की पुकारते हैं इस विषयमें आर्य प्रतिनिधि सभाने तो कानमें तेल डाल लिया है करवट नहीं लेती और क्षत्रिय समाज उप आर्यों की सफरमैना ज्ञात होती है भारतधर्म महा

मण्डल गाढ़ निद्राही मे सोता है कायस्थ समाज तो अपनी जातीय सुधार और जातिके अनाथों के पालन में लगाहुआ है।

सिंह समाजने प्रथमहीं समाजियों से अपना घर भरलिया है। वैश्य समाज को लेखे जोखे से सावकाश नहीं है।

सर्वसामान्य वर्णाश्रम के लोग लम्बी श्वासभरके चहुँओर देखते हैं शुद्ध किये हुए मुसलमान कृस्तान हिन्दू कौम की छाती पर चढ़ने को तैयार हैं ठीक है (पैसा अपना खोटा परखन हारे को दोष) शुद्धि के नेताओं से मेरा प्रयोजन शुद्धि न होने से नहीं है। हमें केवल-रोटी बेटी की शंका है॥ २॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ये वर्ण द्विजाति हैं चौथा वर्ण शूद्र है।

पांचवां कोई नहीं चार वर्णों के अतिरिक्त म्लेच्छ जाति भी पाई जाती है। म्लेच्छों के साथ उक्त वर्णों का रोटी बेटी सम्बन्ध पूर्व से किसी को भी ज्ञात नहीं है। म्लेच्छ लोग जाति के म्लेच्छही पाये

जाते हैं चार वर्णों ने इन्हें कभी अपने में सम्मिलित नहीं किया है । यह हमने प्रत्येक प्राचीन ज्ञाताओं से सूचना पाई है और अपनी बुद्धिसे भी अनुमान किया हम न्याय नीति शास्त्र की साक्षी से नहीं कहते हैं अपने देश भारत की प्रणाली से कहते हैं । हमारी अवस्था इस समय सम्वत १९७० में ६४ । ६५ वर्ष से अधिक है इसलिये अवस्था के अनुसार भी हमारा कथन है और हम भी प्राचीन आर्य धर्म के मतानुयायी हैं आर्यधर्म पालन करते हैं श्री स्वामी दयानन्द महर्षिजी का उपदेश हम तन मनसे स्वीकार करते हैं । मुसलमान तथा ईसाइयों की ओर (डी डबल को यम्) अन्त्यज लोगोंकी शुद्धि सुन२ के हम भी आश्चर्यसागर में गोते खा रहे हैं । न जानें हमारे शुद्धि के नेताओंका वह ज्ञान कैसा है जो इन लोगों पर हाथ डालरहे हैं । शुद्धि होने से तत्काल अपनी जाति में मिला रहे हैं क्या समय ने तो पल्टा नहीं खाया कि भारत गारत हो किसीने कहा है—॥ ३ ॥

न निर्मिताकेननदृष्टपूर्वा न श्रूयतेहेममयीकुरङ्गी ।

तथापितृष्णारघुनन्दनस्य विनाशकालेविपरीतबुद्धिः ॥

प्यारे पाठक ! सोनेकी मृगी न पहिले किसीने रची न देखीगई न किसीको सुन पड़ीहै तौ भी ऐसे ज्ञाता रघुनन्दनजीकी तृष्णा उसपर हुई जो कपट मृग सोनेका बनके आयाथा अवश्यही विनाशकालके समयमें बुद्धि विपरीतहोजातीहै सन्देह नहीं करना ।

हम यही अनुमान म्लेच्छ और अन्त्यज जैसे डूमोंके शुद्धि विषयमें करतेहैं न कभी किसी हिंदूने इन्हें शुद्ध किया न किसीको यह सूचनाहै न इनकी शुद्धि कीजाय न शुद्ध होसकतेहैं ।

हमारे कुमावर्नी अन्त्यज लोगोंने तो उधार भङ्ग खाई है जो कि शुद्धिका अभिमान करते हैं जिन लोगोंके मृत श्मशान में भस्म किये जाते हैं उन्हें शुद्धिसे कोई प्रयोजन नहीं वे तो खास हिंदू हैं । हम नहीं जानतेहैं इस शुद्धिका तात्पर्य्य क्या है जो शुद्धिका बीड़ा उठायाहै इसकी समस्तलोगों को शङ्का है। न जानें वह शुद्धिकी मशीन विलायती है अथवा

छापानी है जोकि आर्यसमाज व क्षत्रिय -समाजने इसका नया कारखाना खोलाहै जोकि शुद्धि की मशीन द्वारा मुसलमान और क्रुस्तानों को एकही घण्टे में हिन्दू बना लेते हैं शुद्धि की मशीन में रखतेही म्लेच्छ लोग खासे आर्य बनजाते हैं। तत्कालही द्विजों में नमस्ते के सम्बन्धी होते हैं। बलिहारी उस मशीनकी वाह भारत! तेरा भाग्योदय, जात गई बात तो रही मनु महाराज हमारे पूर्वाचार्य कहते हैं—

आसमुद्रात्तुवैपूर्वा–दासमुद्रात्तुपश्चिमात्।
तयोरेवान्तरंगिर्यो–रार्यावर्त्तंविदुर्बुधाः॥

उत्तर में हिमालय दक्षिणमें विन्ध्याचल पूर्व और पश्चिम में समुद्र इत्यादि इस मध्य में वर्ण विचार जातीय विचार वाले उत्तम लोगों का निवास है। यहां के लोग वेदानुकूल धर्मपर चलनेवाले ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र चार वर्ण हैं इन में भिन्न और कोई द्वीप और मतवाले नहीं मिलसकते हैं। परन्तु आज दिन के लोग शुद्धि विभ्रम घड़ाधड़ बेखटके मचा रहे हैं जिससे द्विजों को विस्मय होरहा है॥५॥

हमारे शुद्धिसमाजवाले म्लेच्छों को एक दो घन्टे की व्यवस्था से शुद्ध करते जाते हैं और उस शुद्धिको शास्त्रोक्त प्रमाणों से सिद्ध करते हैं । इस शुद्धि विषय की चरचा सुनके कितनेही प्राचीन हिन्दू आर्यों के हृदयमें कठोर आघात पहुँच रहा है। प्रिय मित्रो ! यवनों की शुद्धि धर्मनीति वर्णनीति देशनीतिसे कितनी विरुद्ध अयोग्य है ।

चाण्डालानांसहस्रैस्तु सूरिभिस्तत्वदर्शिभिः ।
एकोहियवनःप्रोक्तो न नीचोयवनात्परः ॥

यह हमारे पूर्वज महर्षि तत्वदर्शियों ने कहा है श्लोकका अभिप्राय स्पष्ट है । इसलिये विशेष लिखने की जरूरत नहीं आप स्वयं समझ सकतेहैं कि यवनोंकी शुद्धि कहां तक धर्मशास्त्र के विरुद्ध है ॥ ९ ॥

हे प्रिय शुद्धिके नेताओ ! जो कोई मनुष्य स्वइच्छा से गोवध करके और गो मांस भक्षण करता है उसके-लिये प्रायश्चित्त व्यवस्था इत्यादि शुद्धि करना धर्मशास्त्र के विरुद्ध है व्यवस्था और प्रायश्चित्त तो उसके लिये

है जिसं वर्णाश्रमीय से अनजाने दैवात् गोहत्या हो जाने प्रायश्चित्त करके वही अपने में मिलाया जाता है ! न जाने हमारे शुद्धिवालों की बुद्धि विचार से हीन क्यों हुई जो कि गोघ.तक गोभक्षक यवनों को शुद्धि से अपने में सम्मिलत करने का विचार कर रहे हैं। ऐसा अनर्थ तो हमने अद्यपर्यन्त कभी नहीं सुना है। यह शुद्धि नेताओं के शास्त्र की आड़से एक कल्पना है कलिका समय हिन्दू विधर्मी अपने आपही कर रहा है। शुद्धि करनेवाले भाइयों को यह तुम्हारी समझ में भी शास्त्र का तात्पर्य वैसाही प्रभाव करता जाता है। स्वयं धर्म नष्ट करनेके मुखिया बनतेजाते हो।

धर्मएवहतोहन्ति धर्मोरक्षातिरक्षितः।

धर्म का नाश करने से वह नष्टधर्म मनुष्य का नाश करदेता है और वही धर्म रक्षित करने से रक्षा करने वाले की रक्षा करता है। धर्म संयुक्त खान पान रोटी बेटी का सम्बन्ध जहां परम्परा से चलाआता है चला जाता है वही धर्म ठीक है रिवाज भी भारत में धर्म गठित दृढ़तासे स्थिर है वह तोड़ना सुगम नहीं ॥ ६ ॥

॥ यह विचारने का विषय है ॥

भारत में जो प्राचीन रिवाज है वह भी धर्मही से गठित है रोटी बेटी का सम्बन्ध उन २ शरीरों का परस्पर होताहै जो शुद्ध वा अशुद्ध के प्रमाण से बने हुए हैं। कोई शरीर शुद्ध और कोई अशुद्ध बनेहैं इस लिये शुद्धका शुद्धसे और अशुद्धका अशुद्धसेही रोटी बेटी सम्बन्ध करना हमारे पूर्वजों का रिवाज है। इस रिवाजको कोई हिन्दू भाई कभी नहीं तोड़ सकता है। शुद्ध शरीर अन्न औषधियों के प्रभाव से बने हैं अशुद्ध शरीर मलमूत्र मांस मदिरा इत्यादि से बने हैं इसकी व्याख्या हम यहां स्थान विस्तार से नहीं करना चाहते हैं।

हे प्रिय शुद्धि के नेताओ ! आप शुद्धि करने से कैसे शुद्ध अशुद्ध प्रमाणयुक्त शरीरों का खानपान और सम्बन्ध मिलाते हो ॥ दूध और जल किसी प्रकार मिल भी सक्ताहै परन्तु दूध और मदिरा के मेल से दोनों ही का नाश है ! इसलिये यवन कृष्टान तथा अन्त्यज और हमारे चारों वर्ण का सम्बन्ध एक होना हमारे

ही नाश का हेतु है । प्रिय भाइयो यवन लोग आप को कभी धोखाही देवेंगे आप हमारी इस बात का ख्याल रखना आप अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मार रहे हैं। शुद्धि चाहे आप किसी की करें परन्तु रोटी बेटी के प्रयोग में वे न मिलाये जावें रोटी बेटी का मेल प्राचीनही मर्य्यादा के अनुसार परस्पर में रहे। हमारी समझमें तो यह आता है कि शुद्धिवाले भाइयों का यह शुद्धि का उद्योग वृथाही है । इससे कोई भी देशोन्नति नहीं सम्भव है मुसलमान कृष्टान अन्त्यजों की शुद्धि विषयमें हमें यह स्मरण आता है कहीं एक स्थान पर एक मनुष्य एक हिरन और एक शूकर एक सर्प मृतक पड़े थे वहां उस मनुष्य का धनुषभी पड़ाथा कहींसे वहां गीदड़ आया देखतेही प्रसन्न होताहै तब शृगाल कहताहै।

मासमेकं नरोयान्ति द्वौ मासौ मृगशूकरौ ।
अहिरेको दिनंयाति अद्य भक्षे धनुर्गुणः ॥

शृगाल प्रसन्नतापूर्वक कहता है एक मासको मेरे भक्षण के लिये मनुष्य होगा और दो मास को मृग और

शूकर होवेंगे एक दिनको सर्पभी होगा पर इस समय मैं क्या खाऊं प्रथम धनुषके तांतही को खाना चाहिये वह स्यार सद्य मांसको छोड़कर लोभमें आके धनुषकी तांत को खानेलगा तांतमें दांत लगातेही तांत टूट पड़ा धनुष स्यारकी छातीपर लगा शृगाल मरगया।

वही ख्याल मेरा शुद्धिके नेताओंपर है जोकि ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंको छोड़के अन्य धर्मावलम्बियों पर हाथ डालते हैं जोकि गोहिंसक गोभक्षक म्लेच्छों की शुद्धिमें दत्तचित्त हैं॥ ७॥

दुर्जनं सज्जनं कर्तु–सुपायो नहि भूतले।
अपानं शतधा धौतं न श्रेष्ठमिन्द्रियं भवेत्॥

प्यारे पाठक! आपभी जानते हैं कि दुर्जन को सज्जन करने के लिये पृथ्वीतलमें कोई उपाय नहींहै मलका त्याग करनेवाली इन्द्रिय सौ बारभी धोई जाय तौ भी श्रेष्ठ इन्द्रिय न होगी। इस लिये जो यवन भी हमारे धर्मसे पृथक् हैं अतएव वे शुद्धिसे भी श्रेष्ठ नहीं होसकते हैं। वे अपना पूर्व स्वभाव नहीं छोडेंगे

क्योंकि उनका रज वीर्य गोमांससे बनाहुआहै । थोड़े ही दिनमें वे शुद्ध किये हुए यवन हमारी उत्तम जाति को नष्ट भ्रष्ट करके अपनेही मतमें जा मिलेंगे कई वर्षकी व्यवस्थासे भी यवन शुद्ध नहीं होसकते हैं न जाने आर्य हिन्दू भाई किस अभिप्राय से अन्य धर्मियों को शुद्ध करते हैं । प्रियमित्रो ! आपकी शुद्धि समाचार सुन २ के भारतके वर्ण आपपर खेदही करते हैं । इस शुद्धिसे परस्पर में रागही उत्पन्न होगा भिन्न धर्मियोंको शुद्ध करनेसे अब श्रेष्ठ आर्य धर्मपर किसी का भी अनुराग नहीं है । छीछी थूथू शब्दका उच्चारण भारत में होरहाहै शुद्धिसेही आर्य धर्मपर धब्बा लगताजाता है ॥ ९ ॥

यह हमें खेदके साथ कहना पड़ा कि जन्म जन्मान्तरों के गोघातक गोभक्षक लोगों की शुद्धिसे उनको हमारे भाई लोग अपनी श्रेष्ठ जातीय द्विजों में मिलाना अधर्म नहीं समझते हैं । हाय शोक महाशोक जब कभी दैवात् हिन्दू लोगों से गोहत्या होती है तो उनके लिये मनुजी ने प्रायश्चित्त व्यवस्था विधान कहा है—

उपपातकसंयुक्तो गोघ्नो मासं यवान्पिबेत् ।
कृतवापो वसेद्गोष्ठे चर्मणा तेन संवृतः ॥
चतुर्थकालमश्नीया-दक्षारलवणं मितम् ।
गोमूत्रेणचरेत्स्नानं द्वौमासौ नियतेन्द्रियः ॥

उपपातक संयुक्त गोहत्या करनेवाला एक मास तक यवोंको पीवे उसी गोचर्म को ओढ़कर और शिर मुंडा कर गोष्ठ में वसे चतुर्यकालमें नपा हुआ खारी नमक खावे दो मासतक वह जितेन्द्रिय होकर गोमूत्रसे स्नान करे दिनमें गौओं के पीछेर विचरे इस के उपरान्त खड़ा होकर गौकी रज (धूल) पिये दिनमें गौ की सेवा करके नमस्कार करके रात्रिमें वीरासन से वसे, इत्यादि २. व्यवस्था से गोहत्या पातक विषय में प्रायश्चित्त कियाजाता है एक वर्ष तक ऐसाही कर तब शुद्ध होता है। भाई लोगो! जिन म्लेच्छों की धर्म प्रणालीही गोहत्या और गोभक्षण है आप उन लोगोंको दो एक घण्टे में हिन्दू कैसे बना सकते हैं यह मर्यादासे विरुद्ध आप करतेहैं हमारी समझ से यह शुद्धिकी मशीन जापान से आई हो ॥ ९ ॥

गोवधोऽयाज्यसंयाज्यः पारदार्यात्मविक्रयः।
गुरुमातृपितृत्यागः स्वाध्यायाग्न्योःसुतस्य च॥

गौका वध अयोग्यको यज्ञ कराना पर स्त्रीगमन करना और आत्माका वेचना आत्मविरुद्ध धन लेना गुरु माता पिता अग्निहोत्र त्यागना यह पातक ही हैं वेदों को त्यागना और वेदकी निन्दा करना अभक्ष्य वस्तुको खाना गोवध करना अग्निहोत्र न करना भगिनी इत्यादि रिस्तेवालीसे विवाह करना इत्यादि लक्षण म्लेच्छों में परम्परासेही पायेजातेहैं। स्वइच्छा से गोवध करनेवालों को व्यवस्था नहीं दीजाती है। वे पतितही कियेजाते हैं।

कौन प्रायश्चित्त योग्य है सो भी तो विचारना था शुद्धिके नेता भाइयो! आपत्ति धर्मकी ओडमें आके एक बारगी मुसलमान ईसाई तथा अन्त्यज लोगों पर शुद्धि का हाथ मारने लगे न जाने इन्हें शुद्ध करके कौनसी सभ्यता प्राप्त होतीहै। यदि आपका चित्त भारत सुधार पर लगा है तो अनुचित नहीं उचित उद्योग करो जिससे भारतके चारों वर्ण आपको धन्य २ ही कहें।

आप तो अपनी बनी बनाई नेशनको तोड़ रहे हो इस शुद्धि से एक घर के दो मत अवश्य होनेवाले हैं. म्लेच्छों को शुद्धकर द्विजों में मिलाना कितना अनर्थ है ऐसा कभी नहीं हुआ है ॥

प्रिय हमारे मित्रो ! शुद्धि के मुखिया लोगो ! काल कूट विष अमृत में न मिलाया जाय अमृत भी विष होजायगा और विष्ठा को भोजन पदार्थों में कौन मिलाता है यह आप नहीं जानते हैं कि वर्णों के टूट जाने से भारत गारतही होगा । कौम और जाति भारतका आधार हैं वर्ण कौमके भंग होनेसे भारत रसातल को पहुंचेगा । शुद्ध किये हुए मुसलमान ईसाई अन्त्यज लोगोंको कोई भी हिन्दू अपनी जातिमें प्रवेश न होने देगा । म्लेच्छ लोग वेद नहीं वेदके दादा उपवेद वेद क्यों न पढ़ें पर वे गोवधक गोभक्षक स्वभावसे रहित न होवेंगे पण्डित लेखरामजीकी मृत्युका स्मरण करो ।

यह तो समस्त लोगों को ज्ञात है कि बादशाही राज्यशासनमें फैजीने हिन्दू बनके काशीजी में जाके सब धर्मशास्त्रों को पढ़ाथा पढ़ने के पीछे वह फिर मुस-

लमानही होगयाथा तब उसने हिन्दू शास्त्र का खण्डन यवनमतका मण्डन किया । इसलिये यवनों का विश्वास कैसे किया जासकता है । यवन लोग कभी तुम्हारे धर्ममें रहनेवाले नहीं पाये जाते हैं । और यही हमारा अनुमान है शुद्धि से बुद्धि न होजाय जो कोई हिन्दू भाई शुद्ध किये हुये लोगोंसे रोटी बेटी का सम्बन्ध करेगा वह अपनी जाति के लोगों से पृथक्ही किया जायगा हिन्दूमतका यही अभिप्राय है । कहा भी है—

कृतेपततिसम्भाष्यन् त्रेतायां स्पर्शनेन च ।
द्वापरे भक्षणे तस्य कलौ पतति कर्म्मणा ॥

सतयुगमें पापीके साथ बात करने से मनुष्य पतित होता था और त्रेता में पापी के स्पर्श करने से द्वापर में पापी का अन्न खाने से पतित होता था । कलियुग में मनुष्य अपनेही अनिष्ट कर्मों से पतित होता है । यह बिचारणीय विषयहै कि जिस कर्म करने से जाति के लोग अपवाद और आक्षेप लगाते हैं वह कभी न कियाजाय जाति के कलंकसे मनुष्य अ-

पातको गिनाजाताहै । मुसलमान कृस्तानोंको शुद्ध करके वेदोंका विश्वासी वनातेही एकही पुश्त में तत्काल रोटी बेटीकेही सम्बन्ध में न मिलाया जाय ! यही अनर्थ समझा जाता है। ऐसा नहीं होता है क्या दरिद्री मनुष्य धनाढ्य होनेसे एकही पुस्त में अमीर कहा जाता है नहीं नहीं वह पहिली पुस्त में भला आदमी दूसरी पुस्त में वड़ा आदमी और तीसरी पुस्त में रईस चौथी में खान्दानी पांचवीं पुस्त में जाके उसकी सन्तान अमीर कही जायगी ॥ ११ ॥

प्रिय पाठक समुदाय ! ऐसेही शुद्ध कियेहुये लोगों से वर्ताव होगा शनैः २ वे लोग ७।८ पुस्त में प्राचीन आर्यों की योग्यता पर कदाचित् जलपान के सम्बन्धी होजावें तो सम्भव नहीं शुद्धिवाले मित्रो ! जो आप एकही पुस्त में उन्हें खान पान में मिलाते हो यही आपकी भूल और अत्याचारही है।

श्री स्वामीजीने किसी यवन ईसाई और (डी डबलको यमको) शुद्ध नहीं किया यह सत्यार्थप्रकाशसे ज्ञात होता है।

स्वामीजीका अभिप्राय था भारतवासी लोग वेदानु-कूल धर्म की स्थिति करें धर्मकी समाजें स्थापित करें शनैः शनैः ही वेदान्तधर्मका प्रचार होवे जोकि सनातन प्राचीन धर्म है।

आर्यधर्मकी उन्नति दिनोंदिन वृद्धि पर थी धर्मसभा इत्यादि आर्यसमाजकी शाख निकली थीं धर्म और समाजों का ख्याल वर्णोंको अवश्य होगया था। आपने जिस दिनसे शुद्धि का बीड़ा उठाया है तब से आर्य धर्मपर धब्बा लगा और अनुचित समझने लगे शङ्काहीके चक्र में आगये प्रिय आर्य भाइयो २२ करोड़ हिन्दुओंको अप्रसन्न क्यों करते हो। यवन ईसाइयों की शुद्धि से हमारी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य जाति इस से भी अधिक सभ्य होनेवाली है। कदापि नहीं यह तो विषका बीज बोतेहो सब धान २२ पंसेरी के भाव कभी नहीं होवेंगे।

माना भी जाय परन्तु शुद्ध किये हुए यवन इत्यादि की नेशन अलग होनी चाहिये। जब कि वे लोग धर्म के लिये हिन्दू होते हैं। यह बात और है शरीर

पर नहीं धर्मका प्रभाव आत्मा पर पड़ताहै जबतक जिसका शरीर शुद्ध प्रमाणयुक्त न होगा तबतक खानपान से पृथक् रहे। जिन मुसलमान ईसाई और अन्त्यजोंको धर्महो मानता है तो वह बिना आर्यों के साथ रोटी बेटी का सम्बन्ध किये हुये भी आर्य होसकते हैं। गोहत्या अनर्थ से बचाना और सत्यमार्ग वेद में लाना यह सम्भव है यज्ञोपवीत उन्हें अभी देना यह उचित नहीं। यह नहीं कि मुसलमान ईसाई वेदों पर विश्वास लातेही हिन्दुओंके साथ रोटी बेटी के भागी बनजावें ऐसा कदापि न होगा। धर्म और है कौम और है शुद्ध किये हुये लोगों को धर्महीसे प्रयोजन होवे। हमारी जाति से नहीं, जिस प्रकार हिन्दू आर्य होतेही भी रोटी बेटी का सम्बन्ध अपनेही गोत्र सम्बन्धी बिरादरी में करते हैं। ऐसेही शुद्ध किये हुए मुसलमान इत्यादिकोंकोभी अपनेही शुद्ध नेशन में रोटी बेटी का सम्बन्ध करना उचित है। उसकी शुद्धि वाली कौम बननी चाहिये। जिन का ऐसा अभिप्राय है। उन्हें अवश्य शुद्ध किया जाय। जो कि शुद्ध किये हुए

तत्काल हिन्दुओं में रोटी बेटी चाहते हैं वे लोग धर्मकी ओट में आकर शिकार खेलते हैं। उन्हें धर्म से प्रयोजन नहीं है सिर्फ हिन्दुओं की जाति बिगाड़ने से प्रयोजन है। जाति पर हाथ मारना चाहते हैं ॥ १२ ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ब्रह्मा के वंशोत्पन्न लोगों को म्लेच्छ लोग किसी प्रकार धोखा देने की चेष्टा पर हैं ऐसा न हो कि इस शुद्धि कुबुद्धि से कभी समाजों जो हानि पहुँचै।

कालोवा कारणंराज्ञो राजा वा काल कारणम्।
इति ते संशयो मा भूत् राजाकालस्यकारणम् ॥

यह भीष्मजी युधिष्ठिरजी से कहते हैं। हे राजन्! राजके अच्छे बुरे होने से काल कारण है। अथवा कालके अच्छे बुरे होने में राजा कारण है यह तेरे को संशय नहीं होनी चाहिये। किन्तु निश्चयहै कि काल राजाके आधीनहै वह जैसा चाहै करें और करा सकताहै राजाज्ञा पालनां प्रजाकाहीं धर्म्म है ॥ १३ ॥

वैदिकधर्मका मुख्य उद्देश अहिंसापर है हिंसाको छोड़ के जो कोई अहिंसा धर्म पालते हैं। उन्हें

आर्य्य कहने में शंका नहीं सच्चा आर्य वही है जो वै-दिक मतको शुद्धतासे फैलावे अज्ञान के अन्धकार को अपनी शीतल कोमलवाणीसे निवारण करे । खान पान छुआ छूतका विचार करे अपने आचरण शुद्ध रक्खे निन्दा स्तुति किसी की न करे हमारी समझ से वही आर्य है निम्न श्लोकों के आधार से कतिपय लोग शुद्धि होना कहते हैं ।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम् ।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यं तथैवच ॥ मनु०
नविशेषोऽस्ति वर्णानां सर्वब्राह्ममिदं जगत् ।
ब्रह्मणा पूर्वसृष्टोहि कर्मभिर्वर्णतांगतः ॥

महाभारत.

इस श्लोक के आधार पर गुण कर्म स्वभाव से हमारे शुद्धिके नेता लोग वर्ण और जाति मानते हैं । कहते हैं कि वर्णोंका वस्तुतः भेद नहीं है वह संपूर्ण जगत्व्यापक ब्रह्मसे आच्छादित है क्योंकि ब्रह्मके द्वाराही पृथ्वी की रचना हुई है ॥

एभिस्तुकर्मभिर्देवि शुभैश्चचरितैस्तथा ।
शूद्रो ब्राह्मणतांयाति वैश्यः क्षत्रियतांव्रजेत् ॥
एभिकर्मफलैर्देवि न्यूनजातिकुलोद्भवः ।
शूद्रोऽप्यागमसम्पन्नो द्विजोभवतिसंस्कृतः ॥
कर्मभिःशुचिभिर्देवि शुद्धात्माविजितेन्द्रियः ।
शूद्रोऽपि द्विजवत्सेव्य इति ब्रह्मानुशासनम् ॥

महाभारत अनुशासनपर्व में शंकर उमा के प्रति कहतेहैं कि हे देवी इन छै शुभाचरणों से शूद्र ब्राह्मण होता है और वैश्य क्षत्रिय होताहै इन कर्मोंके फल से हे देवी ! नीचजाति और नीचकुलोत्पन्न शूद्रभी आगम सम्पन्न और संस्कार विशिष्ट ब्राह्मण होजाताहै । पवित्र कर्मोंके द्वारा हे देवी ! शुद्धात्मा और जितेन्द्रिय शूद्रभी ब्राह्मणके समान सेवा करनेके योग्य है । यह ब्रह्माकी आज्ञा है यथार्थ में ऐसाही है ।

हमारी समझका आशय ।

प्रियपाठक ! यह विषय विचारणीयहै शूद्र जो

होताहै अविद्वान् मूर्ख चारोंही वर्णो से सम्मिलित वर्ण शूद्र शिखाधारियों में है न कि म्लेच्छ जाति है । प्रिय शुद्धिके नेताओ जो भिन्न मतवाले मुसलमान क्रस्तान हिंदू शास्त्र हिंदू मत से शूद्र नहीं कहेजाते हैं वे तो वेदधर्मसे पृथक् मतानुयायी विधर्मी कहेजातेहैं उन्हें आपलोग शूद्रोंमें क्यों गणना करतेहो । उक्त शास्त्र के वचन यथार्थ कहतेहैं शूद्र से ब्राह्मण और ब्राह्मण से शूद्र अवश्य होजाताहै परन्तु शरीर नहीं आत्मा के विषयमें कहा है ।

शरीर वही मानाजाता है रज वीर्यका रोटी बेटी का सम्बन्ध शरीर है यवनों का रजवीर्य और शरीर अखाद्य वस्तु गोमांससे बना है किन्तु शरीर किसीका ब्राह्मण नहीं होसकताहै अवश्य ज्ञानसे ब्राह्मण बनेगा । शरीर तो ब्राह्मणही का ब्राह्मणहै वा व्य-वस्था चान्द्रायण प्रायश्चित्त इत्यादि से शरीर उनका शुद्ध नहीं होसकताहै । केवल आत्मा और मन शुद्ध होता है पूर्वसमयके धर्मनेता आज दिन के लोगों से बड़े बड़े विद्वान शास्त्रवेत्ता आचार्य थे उन्होंने म्ले-

च्छों की शुद्धि नहीं की कहीं कथा वार्त्ताओं में नहीं पायाजाता है । म्लेच्छों की शुद्धिका बीड़ा तो आधुनिक आर्योंनेही उठाया है । आर्यभाइयो ! यह उद्योग तो आपका हमें अनुचित ज्ञात होता है हम भी श्रीस्वामी दयानन्दजी के चेले हैं । प्रियमित्रो ! अभी भारतमें वर्णोंका अभावभी नहीं है । अपनी २ जातिमें सभी कायम हैं क्यों कोई मुसलमान कृस्तानों से रोटी बेटीका सम्बन्ध करेगा । जिनकी सभी बातें हमारे धर्मसे ३६ का सम्बन्ध रखतीहैं उनसे रोटी बेटीका नाता कदापि न होगा । ऐसोंको शुद्ध होनेसेभी हमलोग चारवर्ण के क्या अपने में मिलासक्ते हैं, हरे हरे राम राम हे ऋषिसन्तानों ! यह कैसी लज्जा की बात है कहां चरण कहां माथा ॥ १६ ॥

शुद्धि के नेताओं से यही निवेदन है।

हे प्रियमित्रो ! विनय यही है कि यदि आप मुसलमान कृस्तानों को जो गोहत्या महापापसे बचाना चाहतेहो तो और गायकी रक्षा को चाहतेहो और

गोहत्या रोकने के लिए उनको शुद्ध करतेहो तो यह अभिप्राय आपका ठीक है हम नहीं कहते कि शुद्ध न करें । हमारा अभिप्राय तो यह है धर्ममें यवनलोग शामिल कियेजावें परन्तु खानपान रोटी बेटीका संबन्ध उनसे कदापि न होगा धर्म और है जातिय कौम और है । धर्म जो है आत्मा संबन्धी है प्रत्येकोंका धर्म एक है धर्म संबन्धी ऊँचभी और नीचभी होते हैं । धर्म हमारा सभी भारत के लोगोंका एक है खान पान रिश्ते नाते पृथक् २ हैं इसलिए शुद्धिवालों की नेशनभी पृथक् होनीचाहिये । अभी व प्राचीनआर्यों में न मिलायेजावें किसलिए कि उनकी योग्यता ऐसी नहीं है विनय है कि आर्यसमाज के विज्ञनेता तथा धर्म समाजके विज्ञनेता विद्वान् सज्जन महाशयों से यही निवेदन हैं कि बिटलेहुए लोग जिन्हें आप शुद्ध करतेहो वे धर्म सम्बन्धी होसकते हैं । यदि शुद्धिवालों को अभी अपने खान पान के प्रयोग में लावोगे तो समस्त भारतकें वर्ण आपकें शत्रु होजावेंगे । इस लिए शुद्धिवालों को अपनी जाति में

खान पान विषयमें न मिलायाजाय । यह हमारी सम्मति कौन मानता है परन्तु सुयोग्य वार्त्ता कहन का धर्म है सो कहदिया । हम श्रीस्वामी दयानन्दजी के समय से प्राचीन आर्य हैं अवश्य वह आर्यधर्म हमें प्रियहै सो हम इसे मानतेहैं । यदि आर्यों को बुरा कहदेवें तो कोई बात नहीं परन्तु आर्यधर्मको किसी द्वेषसेभी कभी बुरा नहीं कहेंगे ।

हम पर्वती आर्योंकी शुद्धिकी आवश्यकता नहीं है हमारे गढ़वाल कमाऊँमें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इत्यादि के सिवाय और जाति नहीं हैं । हमारे देशमें छुआछूत छूमव्यालका बड़ा विचार है ऐसाही चाहिये पूर्व रिवाज अवश्य मानाजाताहै । आचरण शुद्ध रखनेसे धर्मभी शुद्ध रहता है हमारे देशके अन्त्यज लोगो तुम तो खासे हिंदूहो तुम्हें शुद्धिसे क्या प्रयोजन है अपने आचरणको सुधारो मद्य मांस इत्यादि अभक्ष्य पदार्थों का त्याग करो और विद्या पढ़ो धर्म जानजावोगे अपनी उसी जातिको सुधारो अभी यज्ञोपवीत धारण करना तुम्हारे लिये कालासर्प है समस्त भारतमें बहुत हिंदू

विना जनेऊके हैं जिनके हाथ का हमलोग जलपान करते हैं । हिंदू आर्यभाइयो यदि यह मेरा कथन आपके मत से अनुचितहो तो यह समस्त लेख मुझे माफ करना मैं एक बुढ़ा मनुष्यहूँ वृद्धोंको सभी मानते हैं ।

पं० शिवदत्त सत्ती शर्मा
(रानीखेत)

इति ।

———:o:———

सनातनधर्मियों से विनय ।

समस्त कूर्माचल निवासी विशेषकर अल्मोड़ा नगर निवासी सनातनधर्मावलम्बी सत्पुरुषों की सेवामें सविनय प्रार्थना है कि अल्मोड़ा की सनातनधर्मसभा दो वर्षसे यथाशक्ति सनातन हिन्दूधर्म की सेवा कररही है । यह सभा केवल अल्मोड़ानगर की धर्मसभा नहीं है किन्तु सारे कूर्माचलप्रदेश की धर्मसभाहै । खेदके साथ लिखना पड़ताहै कि अभीतक हमारे नगर निवासी सनातनधर्मानुयायी अधिकांश सज्जनोंका

उदासीनभाव है सभा के कार्य से तटस्थ रहते हैं। सभा की आर्थिकदशा अच्छी नहीं मेम्बरों की भी संख्या न्यून है न धनबल है, न जनबल है, निर्बल होकर गो रूपधारी पृथिवी की भांति यह आपकी धर्मसभा अपनी रक्षा के निमित्त त्राहिमां त्राहिमां कर रहीहै। धर्मवीरो ! धर्मकी रक्षा करो यह रक्षितधर्म आपकी भी रक्षा करेगा।

जो नगर अल्मोड़ा हमारे (पर्वतके) उच्चकोटिके ब्राह्मणोंका केन्द्र है जहां उदार धार्मिक वैश्यों का निवासहै। जो हमारे प्राचीन राजकुलके चन्द्रनरेशों की राजधानीहै जहां आजभी शिक्षित पुरुषों की न्यूनता नहीं है जिस नगरके सुशिक्षित विद्वानोंने उच्च राजपदों से विभूषित होकर गौरीगुरू हिमवान् पर्वतके कूर्माचल प्रदेश का मुख उज्वल कियाहै। जहांके चातुर्वर्ण सनातनधर्मीहैं। उस नगरकी धर्मसभा असहाय होकर डामाडोल हो:नेलगे यह कितनी लज्जाकी बातहै आइये सभामें योग दीजिए। तन मन धन लगाकर इसटूटी फूटी सभाको आदर्श

सनातनधर्म महासभा बनाइये इसके द्वारा धर्मप्रचार विद्या प्रचार ब्रह्मचर्य गोरक्षा अनाथ पालन कीजिये ।

शुभमस्तु ।

निवेदक—

मंत्री सनातनधर्म सभा–अल्मोड़ा

———:०:———